

समांतर चेतावनियाँ - संख्या तीन

भविष्यसूचक संदेशों का सशक्तिकरण: प्रकाशितवाक्य के स्वर्गदूतों की क्रमबद्ध परख-प्रक्रिया

Jeff Pippenger

2023-08-08

हमने पिछले लेख का समापन इस निष्कर्ष के साथ किया कि प्रकाशितवाक्य चौदह के तीनों स्वर्गदूतों के हाथों में संदेश है। दूसरे और तीसरे स्वर्गदूत का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि वे अपने संदेश के साथ उतरते हुए अपने पास 'चर्मपत्र' लिए हुए हैं। प्रत्येक स्वर्गदूत एक संदेश का प्रतिनिधित्व करता है, और प्रत्येक संदेश का आगमन एक प्रभाव उत्पन्न करता है। पहला स्वर्गदूत 1798 में आया। उस संदेश की मुहर खोली गई और आसन्न न्याय के विषय में ज्ञान में वृद्धि हुई। उस ज्ञान-वृद्धि ने उपासकों के दो वर्ग उत्पन्न किए। जब दूसरा स्वर्गदूत आया, तो प्रोटेस्टेंटों के पतन के संदेश की मुहर खोली गई, और ज्ञान में वृद्धि हुई तथा दो वर्ग उत्पन्न हुए। जब 22 अक्टूबर, 1844 को 'आधी रात की पुकार' का संदेश आया, तो उसकी मुहर एक्सेटर कैम्प मीटिंग में खोली गई और ज्ञान में वृद्धि हुई तथा कुमारियों की दो श्रेणियाँ उत्पन्न हुईं। जब तीसरा स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 को आया, तो तीसरे स्वर्गदूत के संदेश और जो कुछ वह दर्शाता है, उसकी मुहर खोली गई, और ज्ञान में वृद्धि हुई तथा दो वर्ग उत्पन्न हुए।

स्वर्गदूतों में पाई जाने वाली एक अन्य विशेषता स्वर्गदूतों के संदेशों के सशक्तिकरण से संबंधित है। जैसा कि पिछले लेख ने दिखाया, दूसरे स्वर्गदूत का संदेश आधी रात की पुकार के संदेश से सशक्त हुआ; परंतु आधी रात की पुकार का प्रतिनिधित्व किसी एकमात्र स्वर्गदूत द्वारा नहीं, बल्कि अनेक स्वर्गदूतों द्वारा किया गया है। दूसरे स्वर्गदूत और आधी रात की पुकार से संबद्ध इतिहास यह दर्शाता है कि जब आधी रात की पुकार उसके साथ जुड़ गई, तब दूसरे स्वर्गदूत का संदेश सशक्त हुआ। उसी पुस्तक में हमें बताया गया है:

मैंने स्वर्ग में स्वर्गदूतों को इधर-उधर तेजी से आते-जाते देखा। वे पृथ्वी पर उतरते और फिर स्वर्ग में ऊपर उठते थे, किसी महत्वपूर्ण घटना की पूर्ति की तैयारी करते हुए। तब मैंने एक और शक्तिशाली स्वर्गदूत को देखा, जिसे पृथ्वी पर उतरने का आदेश दिया गया था, ताकि वह तीसरे स्वर्गदूत के साथ अपनी आवाज़ मिलाकर उसके संदेश को सामर्थ और बल दे। उस स्वर्गदूत को महान शक्ति और महिमा प्रदान की गई, और जैसे ही वह उतरा, पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशित हो गई। जो प्रकाश इस स्वर्गदूत के आगे-आगे जाता और उसके पीछे-पीछे चलता था, वह हर जगह तक पहुँच गया, जब वह बड़े बल से, ऊँची आवाज़ में पुकारते हुए कह रहा था, “महान बाबुल गिर गया है, गिर गया है, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान, हर अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और हर अशुद्ध और घृणित पक्षी का पिंजरा बन गया है।” बाबुल के पतन का संदेश, जैसा कि दूसरे स्वर्गदूत ने दिया था, फिर से दिया जाता है, और इसमें उन भ्रष्टाचारों का भी समावेश है जो 1844 से कलीसियाओं में प्रवेश करते रहे हैं। इस स्वर्गदूत का काम ठीक समय पर आता है और जैसे-जैसे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश का अंतिम महान कार्य एक जोरदार पुकार में बदलता है, यह उसमें सम्मिलित हो जाता है। और परमेश्वर की प्रजा हर जगह इस योग्य बनाई जाती है कि जिस परीक्षा की घड़ी का वे शीघ्र सामना करने वाले हैं, उसमें स्थिर खड़ी रह सके। मैंने देखा कि उनके ऊपर एक महान प्रकाश ठहरा हुआ था, और वे संदेश में एकजुट हो गए, और बड़े सामर्थ से निडर होकर तीसरे स्वर्गदूत का संदेश प्रचार किया।

स्वर्ग से आए उस शक्तिशाली स्वर्गदूत की सहायता के लिए अन्य स्वर्गदूत भेजे गए, और मुझे ऐसी आवाज़ें सुनाई दीं जो हर जगह से आती प्रतीत होती थीं: “उसमें से निकल आओ, हे मेरे लोगों, ताकि तुम उसके पापों के सहभागी न बनो, और उसकी विपत्तियों को न भुगतो; क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसकी अधर्मता को स्मरण किया है।” यह संदेश तीसरे संदेश का एक पूरक-सा प्रतीत हुआ, और उससे मिल गया, जैसे 1844 में आधी रात की पुकार दूसरे स्वर्गदूत के संदेश से मिल गई थी। परमेश्वर की महिमा धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे संतों पर ठहर गई, और उन्होंने निडर होकर अंतिम गंभीर चेतावनी दी—बाबेल के पतन की घोषणा करते हुए, और परमेश्वर के लोगों को उसमें से निकल आने के लिए पुकारते हुए; ताकि वे उसके भयानक

विनाश से बच निकलें। Spiritual Gifts, खंड 1, 193, 194.

आधी रात की पुकार दूसरे स्वर्गदूत के साथ जुड़ गई, और प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत तीसरे स्वर्गदूत के साथ जुड़ता है; और जब वह तीसरे स्वर्गदूत के साथ जुड़ता है, तो वह एडवेंटवाद की शुरुआत में 'आधी रात की पुकार' और दूसरे स्वर्गदूत के मिलन की पुनरावृत्ति करता है। दो साक्षियों—दूसरे और तीसरे स्वर्गदूत—के आधार पर, हर स्वर्गदूत के संदेश के साथ एक द्वितीयक संदेश होता है जो उसे सशक्त करता है। ये दोनों साक्षी सिखाते हैं कि इतिहास में जब पहले स्वर्गदूत का संदेश आया, तो उसके बाद एक समय ऐसा आना था जब वह संदेश एक द्वितीयक संदेश द्वारा सशक्त किया गया। यह बात, स्वाभाविक रूप से, पहले स्वर्गदूत पर भी लागू थी। जिस लंबे खंड का हमने अभी उल्लेख किया, उसके पहले अनुच्छेद में, बहन व्हाइट पहले स्वर्गदूत के लिए वही विशेषताएँ बताती हैं जो यूहन्ना प्रकाशितवाक्य अठारह के स्वर्गदूत को देता है, जब वह कहती हैं, "मुझे बताया गया कि उसका कार्य अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करना और मनुष्य को परमेश्वर के आने वाले क्रोध के विषय में चेतावनी देना था।" उस खंड से स्पष्ट है कि वह पहले स्वर्गदूत का ही उल्लेख कर रही हैं।

पहले स्वर्गदूत के संदेश का आगमन 1798 में हुआ, और तत्पश्चात् 11 अगस्त, 1840 को, जब ओटोमन प्रभुत्व समाप्त हो गया, उसे सशक्त किया गया। उसी समय प्रकाशितवाक्य दस का शक्तिशाली स्वर्गदूत स्वर्ग से उतर आया और एक पाँच भूमि पर तथा दूसरा समुद्र पर रखा। वह पहले स्वर्गदूत के सशक्तिकरण का प्रतिनिधित्व करता है, और इसी से यह स्पष्ट होता है कि पहले स्वर्गदूत का कार्य वही है जो प्रकाशितवाक्य अठारह के स्वर्गदूत का है। दोनों को अपनी महिमा से पृथ्वी को प्रकाशमान करना था, परन्तु प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत तीसरे स्वर्गदूत के साथ जुड़ता है, जैसे मध्यरात्रि पुकार दूसरे स्वर्गदूत के साथ जुड़ गई, और जैसे प्रकाशितवाक्य दस में उतरा स्वर्गदूत पहले स्वर्गदूत के साथ जुड़ गया।

अतः जब पहला स्वर्गदूत आया, तो एक संदेश की मुहर खोली गई, जिसने उपासकों की दो श्रेणियाँ उत्पन्न कीं। जब प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के स्वर्गदूत द्वारा पहले स्वर्गदूत के संदेश को सशक्त किया गया, तब उसके हाथ में एक छोटी पुस्तक थी, जिसे खाने का उसने यूहन्ना को आदेश दिया, यह दर्शाते हुए कि वह एक संदेश लेकर आया, उसकी मुहर खोली, और उससे उपासकों की दो श्रेणियाँ उत्पन्न हुईं। जब दूसरा स्वर्गदूत, मध्यरात्रि की पुकार, और तीसरा स्वर्गदूत आए, तब एक संदेश की मुहर खोली गई, जिसने परखा और उपासकों की दो श्रेणियाँ उत्पन्न कीं।

जिस अनुच्छेद पर हम चर्चा कर रहे हैं, वह मसीह के इतिहास की तुलना मिलराइट्स के इतिहास से करके इस बात पर बल देता है कि मिलराइट्स के इतिहास में जो क्रमिक परीक्षण प्रक्रिया हुई थी, वही मसीह के दिनों में भी हुई, जो प्राचीन इस्राएल के अंत का समय था। यदि आध्यात्मिक इस्राएल की शुरुआत में और प्राचीन इस्राएल के अंत में एक क्रमिक परीक्षण प्रक्रिया हुई थी, तो आध्यात्मिक इस्राएल के अंत में भी एक क्रमिक परीक्षण प्रक्रिया होगी, जैसे कि प्राचीन इस्राएल की शुरुआत में थी।

मिलराइट इतिहास में, यह पाँच मुहरों के खुलने को दर्शाता है; इस प्रक्रिया ने 1798 से 22 अक्टूबर, 1844 तक उपासकों के दो वर्गों की परीक्षा ली और उन्हें उजागर किया। यह खंड स्पष्ट रूप से सिखाता है कि यदि आप किसी परीक्षा में असफल हो जाते हैं, तो आप अगली परीक्षा पास नहीं करेंगे, क्योंकि आप प्रयास ही नहीं करेंगे। यह भी स्पष्ट है कि मसीह के समय में परीक्षा की प्रक्रिया का समापन इस प्रकार होता है कि पूर्व में चुने गए वाचा के लोग उद्धार की योजना के संबंध में पूर्ण अंधकार में रह जाते हैं। दानियेल और यूहन्ना उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पीछे से आने वाली आवाज़ को सुनते हैं, वे जो एक क्रमिक परीक्षण प्रक्रिया से होकर गुज़रे, जिसमें मुहर खुलने पर प्रकट हुई हर नई सच्चाई की व्यक्तिगत जाँच-पड़ताल आवश्यक थी।

दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक ही पुस्तक हैं, और दानियेल और यूहन्ना उसी एक पुस्तक के दो गवाह हैं। एक गवाह पुस्तक की शुरुआत है, और दूसरा गवाह पुस्तक का अंत है। दोनों गवाहों ने प्रतीकात्मक रूप से मृत्यु और पुनरुत्थान का अनुभव किया; एक को मादी-फारस साम्राज्य द्वारा सताया गया (जो संयुक्त राज्य का प्रतीक है), और दूसरे को रोम द्वारा सताया गया (जो पापाइ सत्ता का प्रतीक है)। यूहन्ना को इसलिए सताया जा रहा है क्योंकि वह

सब्त-पालक है; यह दानियेल के उस उदाहरण से मेल खाता है, जिसे अपनी उपासना की रीति बदलने से इनकार करने के कारण सताया गया था। दोनों मिलकर संसार के अंत में उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें सातवें दिन के सब्त के स्थान पर रविवार की उपासना स्वीकार करने से इनकार करने के कारण सताया जाता है।

दानियेल और यूहन्ना द्वारा जिनका प्रतिनिधित्व किया गया है, वे वही लोग हैं जो मुहरबंद किए गए हैं या किए जाएंगे; क्योंकि जब दानियेल को राजा के 'आदेश' का पालन न करने पर सिंहीं की मांद में डाला गया, तब राजा ने पत्थर पर मुहर लगा दी, ताकि निर्णय बदला न जाए। दानियेल पर अनन्तकाल के लिए मुहर लगी थी, क्योंकि मादी और फ़ारसियों की व्यवस्था के अनुसार राजा का आदेश और उसकी मुहर का अधिकार बदला नहीं जा सकता था। राजा की मुहर एक पत्थर पर लगाई गई और द्वार बन्द कर दिया गया। रविवार के क़ानून के समय द्वार बन्द हो जाता है, और कोई मनुष्य उस द्वार को खोल नहीं सकता, जैसे कि 22 अक्टूबर, 1844 को द्वार बन्द कर दिया गया था। यह एक सरल उदाहरण था कि किसी भविष्यवाणी में प्रस्तुत भविष्यसूचक घटनाओं पर ही नहीं, बल्कि जब कथा में भविष्यद्वक्ता का चित्रण किया जाता है, तब उसके चारों ओर की परिस्थितियों का भी अनुप्रयोग करना कितना महत्वपूर्ण है।

फिर भी यह इस बात का भी उदाहरण है कि आरंभ (दानियेल की पुस्तक) और अंत (प्रकाशितवाक्य की पुस्तक) को एक ही भविष्यवाणी के दो गवाह मानकर एकसाथ विचार करना कितना सशक्त है, क्योंकि किसी बाइबिलीय तथ्य की स्थापना के लिए दो गवाह आवश्यक होते हैं। भविष्यवाणी से संबंधित भविष्यकथित घटनाएँ और नबियों की गतिविधियों का चित्रण—दोनों ईश्वर-प्रेरित हैं।

सम्पूर्ण शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है, और यह उपदेश, ताड़ना, सुधार, तथा धर्म में शिक्षा के लिए लाभदायक है; ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध हो, और हर एक भले काम के लिए भली-भाँति सुसज्जित हो। 2 तीमुथियुस 3:16, 17.

यदि बाइबल में बताई गई भविष्यवाणी की घटनाएँ संसार के अंत को चित्रित करती हैं, तो जब भविष्यवक्ता भविष्यवाणी को प्राप्त करता है और उसकी गवाही देता है, उस समय उसके और उसके परिवेश का चित्रण भी संसार के अंत का चित्रण है। अतः जब किसी भविष्यवक्ता के परिवेश और गतिविधियों का भविष्यसूचक रूप से चित्रण किया जाता है, तब वह भविष्यवक्ता संसार के अंत में परमेश्वर की प्रजा का एक चित्रण होता है। इस समझ के साथ, जब हम मलाकी की एलिय्याह संबंधी भविष्यवाणी की रेखा को प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 और 18 की रेखाओं के साथ मिलाते हैं, तो वे सब अंतिम चेतावनी संदेश के इतिहास की गवाही देती हैं, पर उनकी गवाही दोहरी है।

यह संदेश उन भविष्यवाणी की गई घटनाओं से मिलकर बना है जो परमेश्वर की प्रजा के बाहर की हैं, और एक द्वितीयक साक्ष्य संदेश को प्राप्त करने और उसका प्रचार करने के दौरान नबी के अनुभव से मिलकर बना है। उसी इतिहास के बाहरी और आंतरिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाली दो भविष्यवाणी रेखाओं की अवधारणा को ऐडवेंटाद के अग्रदूतों ने मान्यता दी और सार्वजनिक अभिलेख में दर्ज कराया। मेरे विचार में, अग्रदूतों द्वारा इस अनुप्रयोग का क्लासिक उदाहरण तब है जब वे यह पहचानते हैं कि प्रकाशितवाक्य की सात कलीसियाएँ और प्रकाशितवाक्य की सात मुहरें समानांतर इतिहास हैं, जो कलीसिया के आंतरिक और बाहरी इतिहास की पहचान कराती हैं। मुहरें बाहरी इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं, और कलीसियाएँ आंतरिक का।

मलाकी में एलिय्याह का संदेश, और प्रकाशितवाक्य के अध्याय चौदह तथा अठारह, उसी अंतिम चेतावनी संदेश की पहचान कराते हैं, जिसे प्रकाशितवाक्य के प्रथम अध्याय में 'यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य' भी कहा गया है। प्रथम अध्याय में परमपिता परमेश्वर ने वह संदेश मसीह को दिया, जिसने फिर उसे गब्रिएल को दिया, जिसने फिर उसे यूहन्ना को दिया, और यूहन्ना ने उसे कलीसियाओं को भेजा। एलिय्याह का संदेश, तथा प्रकाशितवाक्य के अध्याय एक, चौदह और अठारह में प्रस्तुत संदेश, सभी एक ही संदेश हैं।

और भविष्यद्वक्ताओं की आत्माएँ भविष्यद्वक्ताओं के वश में रहती हैं। क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है; जैसा कि सन्तों की सब कलीसियाओं में है। 1 कुरिन्थियों 14:32, 33.

यह हमेशा वही संदेश होता है, क्योंकि "भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वक्ताओं के अधीन होते हैं." पदों में "subject" के रूप में अनूदित शब्द का अर्थ है, "अधीन करना; स्वयं आज्ञा मानना: - आज्ञा के अधीन होना (आज्ञाकारी), अधीन कर देना, वश में करना, (होना, करना) अधीन (के प्रति, के अधीन), (के प्रति, के अधीन) अधीनता में होना (डाला जाना), अपने आप को अधीन करना." सभी भविष्यद्वक्ता आपस में सहमत होते हैं और एक-दूसरे के प्रति अधीन रहते हैं, नहीं तो उनका दिया हुआ संदेश भ्रम उत्पन्न करता।

अंतिम चेतावनी के संदेश के सभी भविष्यसूचक चित्रण एक ही संदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रभु की योजना है कि दस कुँवारियों के दृष्टान्त में जिन्हें "बुद्धिमान" माना गया है—और जिन्हें दानियेल की पुस्तक की मुहर खुलने पर "ज्ञान की वृद्धि" को "समझने" वाले "बुद्धिमान" भी कहा गया है—प्रभु की यही इच्छा है कि मुहर खुलने पर वे "बुद्धिमान" उस विशेष संदेश को पहचानें। उस पहचान तक पहुँचना बाइबल में स्वयं विशेष रूप से निर्दिष्ट बाइबिल अध्ययन की पद्धति को लागू करके संभव होता है। वह पद्धति यशायाह अध्याय 28 के अनुरूप इस प्रक्रिया के माध्यम से कार्यान्वित होती है कि किसी बाइबिल विषय से संबंधित विभिन्न भविष्यसूचक रेखाओं को एक-दूसरे के समानांतर रखकर साथ लाया जाए, ताकि सही भविष्यसूचक घटनाओं की स्थापना की जा सके।

हम आपसे धैर्य की विनती करते हैं, क्योंकि हम इस लेख को यहीं समाप्त कर रहे हैं और इन विचारों को अगले लेख में जारी रखेंगे।